Vol.-VIII No.-1&2-2017 ISSN-2231 1483

Wisdom Herald

International Multidisciplinary Refereed Quarterly Research Journal

Chief -Editor
Prof. Shyam Nath Mishra

Executive -Editor
Dr. Anjani Kumar Mishra

Editor
Dr. Aparna

Published by
Society for Indo-Tibetan Buddhist Studies Delhi
Approved by U.G.C., New Delhi

Scanned by CamScanner

बनारस की ठुमरियाँ 107-110
अर्चना सिंह

Role of services sector in economic growth of india 111-116
Sanober

सामाजिक विकास एवं परिवर्तन में संगीत की भूमिका 117-130
डॉ0 आरती श्योकंद

स्वच्छ भारत के निर्माण में हिन्दी समाचार पत्रों की भूमिका 131-136
डॉ0 अवध बिहारी सिंह

अद्वैतवादी दर्शन का केन्द्र बिन्दु 'माया' 137-140
डॉ. नागेन्द्र तिवारी

आधुनिक काव्यशास्त्र परम्परा के काव्यप्रयोजन 141-148
डॉ. रामहेत गौतम

कामकाजी महिलाओं के मानवाधिकार 149-154
पिंकी

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सामाजिक न्याय 155-160
डॉ. राधेश्याम राम

जैन दर्शन में भाषा का स्वरूप एवं प्रकार 161-164
विकास कुमार

शिवमंगल सिंह सुमन का काव्यगत सौन्दर्य 165-170
आशीष कुमारी कान्ता

मनरेगा एवं महिला विकास 171-174
माया भारती

Scanned by CamScanner

आधुनिक काव्यशास्त्र परम्परा के काव्यप्रयोजन

डॉ. रामहेत गौतम*

इस स्वार्थ पूर्ण संसार में कोई भी प्राणी निष्प्रयोजन किसी कार्य में प्रवृत्त होते हुए नहीं देख जाता। इसे भली–भांति अनुभव करके किसी ने ठीक ही कहा है– प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दो अपि न प्रवर्त्तते। कुमारिल भट्ट ने प्रयोजन की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा है– सर्वस्यैव हि शास्त्रस्य कर्मणो वापि कस्यचित्। यावत् प्रयोजनं नोक्तं तावत्तत्केन गृह्यते।।1 प्रयोजन का अनुबंध चतुष्टय में विशिष्ट स्थान रहा है। संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में आरम्भ से ही काव्य प्रयोजनों पर विचार किया जाता रहा है। इस परम्परा में आचार्य भरत का नाम सर्वप्रथम आता है।

दुखार्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं लोके नाट्यमेतद् भविष्यति।
धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम्।
लेकोपदेशजननं नट्यमेतद् भविष्यति।।2

कालान्तर में आचार्य मम्मट ने भरत भामह से भोज तक के सभी काव्य प्रयोजन सम्बन्धी मतों में समन्वय स्थापित करते हुए काव्यप्रयोजन का निरूपण करते हुए कहा है –

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिवृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुते।।3

सत्रहवी शती के आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ के बाद काव्य–विधा के साथ–साथ काव्यशास्त्रीय विधाओं में भी विविधता आयी है। काव्य की उपजीव्यता में परिवर्तन आने के साथ–साथ काव्य लिखने के प्रयोजन भी प्रभावित हुए हैं। आधुनिक काव्य प्रयोजनों पर विचार करने पर हमें ज्ञात होता है कि कुछ कवि प्राचीन काव्यशास्त्रीय परम्परा का अनुशरण कर रहे हैं, तो कुछ ने प्राचीन काव्यशास्त्रीय सीमाओं को लांघा है।

छज्जूराम शास्त्री विद्यासागर ने धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष के साथ कीर्ति और प्रीति को काव्य का प्रयोजन मानते कहा है कि–

*सहायक प्राध्यापक संस्कृत, डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.

Scanned by CamScanner

धर्मस्यार्थस्य कामस्य मोक्षस्यापि प्रयोजकम्।
कीर्तिप्रीतिकरं चाह भामहः काव्यसेवनम्।।4

विद्यासागर जी ने आचार्य भामह के मत को ही तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत किया है। उनके काव्य प्रयोजन निर्धारण में कोई नवीनता देखने को नहीं मिलती। वद्रीनाथ झा कीर्ति, पुरुषार्थ चतुष्टय एवं कलुष निवृत्ति को तथा सहृदय की दृष्टि से ज्ञानप्राप्ति, आनन्दानुभूति एवं असमोपदेश्त्व को काव्य का प्रयोजन स्वीकार करते हैं।

तस्य फलं निर्मातुः कीर्तिचतुर्वर्गकलुषमोषाद्यम्।
प्रतिपत्तुविज्ञानं निर्वृतिरसमोपदेशत्व्च।।5

हरिदास सिद्धांत वागीश ने भी प्राचीन आचार्य भट्टनायक के समान केवल आनन्द को ही काव्य लिखे जाने का प्रयोजन माना है।

'प्रयोजनं आनन्दं काव्यस्य'6

हरिदास वागीश कहते हैं कि – काव्याच्चतुर्वर्गफलप्राप्तिस्तु श्रीफलतरुतो रसालफलप्राप्तिरिव कौतुकावहं तत्त्वज्ञानम्। श्रृंगारतिलक श्रवणान्निवृत्तिमुक्ति लाभप्रलोभनं कं न विस्मारयति।7 काव्य सर्जना से चतुर्वर्ग फलप्राप्ति तो श्रीफल वृक्ष से रसालफल की पाने की सोचना आश्चर्यजनक है। यदि कोई 'श्रृंगारतिलक' काव्य सर्जना करने या उसके रसास्वादन से मोक्ष की कामना करे तो यह आश्चर्यजनक ही है।

आचार्य सीताराम चतुर्वेदी – आनन्द को ही काव्य–प्रयोजन मानते हुए कहते हैं कि– **आनन्द जननमेव हि साहित्यस्य प्रयोजनम्।8** अन्य प्रयोजनों को आनन्द में ही समायोजित करते हुए कहते हैं कि काव्य सर्जना का आनन्द ही एकमात्र परम प्रयोजन है। उससे परमप्रयोजन अन्य कोई नहीं है। जिस प्रकार कई लोगों के पदचिह्न हाथी के पदचिह्न में समाकर क्षीण हो जाते हैं, उसी प्रकार आनन्द की प्राप्ति हो जाने पर छोटे–मोटे प्रयोजन तो स्वतः ही सिद्ध हो जाते है। **आनन्दं हि परासिद्धिः। न ही आनन्दात् परं किञ्चिदपरं प्राप्यमस्ति। सर्वे पदा हस्तिपदे निमग्ना इति न्यायेन आनन्दप्राप्त्यन्तरेन हि किंचिदवशिष्यते प्राप्तुम्। .....अतएव आनन्दमेव साहित्यस्यैकमात्रप्रयोजनम्। यशोधनादय अन्या उपलब्ध्यस्तु आनन्दे समा एवं अनायासेनैव समायन्ति।9**

स्वार्थभाव से ग्रसित होकर किसी प्रशस्तिपरस्त को प्रशन्न करने के लिए काव्य सर्जना करने वालों को आचार्य चतुर्वेदी ने भाट कहा है।

पण्डित गिरिधर लाल व्यास – अपने काव्यशास्त्र' अभिनवकाव्यप्रकाश' में परमनिवृत्ति को ही काव्य का प्रयोजन माना है।

रसो वै स रसं लब्ध्वानन्दी भवति नित्यदा।
इत्यादिश्रुतिवाक्यैर्हि मता परमनिवृत्तिः।।10

Scanned by CamScanner

आचार्य रहसविहारी द्विवेदी के अनुसार – लोक को असद् मार्ग से हटाकर सद्मार्ग में प्रवृत्ति को काव्य का प्रयोजन मानते हुए कहते हैं–कविकीर्ति, पुरस्कार, स्वान्तःसुख की इच्छा, सच्चरितांकन, राष्ट्रभक्ति, युगधर्म आदि भी कवि की काव्य रचना के प्रयोजन होते है।

असन्तं मार्गमुत्सृज्य सन्तं गमयितुं जनम्।
हृदाह्लादिकया वाचा प्रज्ञावान् काव्यमङ्कते।।
कविकीर्ति पुरस्कार–स्वान्तः सुखसमीहया।
प्राक्कथावस्तुसंस्कारं सताञ्च चरिताङ्कनम्।।
नव्यकाव्यविधोन्मेषं व्यङ्ग्योक्तिं विकृतौ तथा।
राष्ट्रभक्तिं युगौचित्यं प्र्यावरणचेतनाम्।
रास्ट्रस्वातन्त्रवीराणां चरितं चाराध्यमीश्वरम्
समुद्दिश्याधुना काव्यं कुर्वन्ति कवितल्लजाः।।11

यहाँ राष्ट्रभक्ति, युगधर्म आदि काव्यप्रयोजन नवीन हैं।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी मुक्ति को काव्य का प्रयोजन मानते हुए कहते हैं– 'मुक्तिस्तस्य प्रयोजनम्'। यहाँ मुक्ति से तात्पर्य आवरण का भंग होना है। संकुचितप्रमातृत्व ही आवरण है। कवि और सहृदय का चैतन्य दोनों को ही प्रमाता कहा गया है। 'मुक्तिश्चावरणभङ्गः, आवरणः च संकुचितप्रमातृत्वम्, प्रमाता च कविः सहृदयश्च'12 रूपक को देखने, श्रव्य काव्य के श्रवण अथवा पठन से प्रमाता सहृदय का चैतन्य आनन्द को प्राप्त करता है। यह आनन्त्यानुभूति ही मुक्ति है। काव्यस्य श्रवणेन पाठेन नाट्यस्य विलोकनेन अन्यासां च कलानां प्रत्येक्षेण प्रमातुः सहृदयश्च चैतन्यमानन्त्यमृपरयाति। अयमानन्त्यानुभव एव मुक्तिः।13 काव्य के श्रवण व पठन से, रूपक को देखने से प्रमाता सहृदय का चैतन्य आनन्त्य को प्राप्त करता है। यह आनन्त्यानुभव ही मुक्ति है। आचार्य त्रिपाठी कहते हैं कि इस लोक में किसी ने भी सुख या दुख से अधिक मोक्ष को नहीं देखा। किन्तु सहृदय रसिक जन काव्यानुभूति के द्वारा तथा कवि काव्य रचना के द्वारा क्लेशमय अनुभूतियों से मुक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया करते हैं। अतः आचार्य नें कवि व सहृदय दोनों को ही प्रमाता माना है।

आचार्य ब्रह्मानन्द शर्मा–कवि की काव्यकर्म में प्रवृत्ति को स्वभावगत ही मानते हैं। कविस्वभाव सत्योन्मुख और अभिव्यक्ति परक भेद से दो प्रकार का माना है। सत्योन्मुखी कवि सत्य दर्शन व सत्याभिव्यक्ति करता है। परिणामतः सुख की ही प्राप्ति करता है। सत्योनमुखी सहृदय भी सत्यानुभूति से सुख ही प्राता है। अतः कवि तथा सहृदय दोनों की दृष्टि से काव्यकर्म का मूल प्रयोजन सत्यानुभूति परक सुख ही है। अर्थ आदि अन्य प्रयोजनों को अधिक प्रभावकारी नहीं मानते।

Scanned by CamScanner

प्रवृत्तिर्या कवेः सत्ये, काव्ये सा परिवर्तते।
नात्र प्रयोजनं किञ्चित् स्वभावस्तु प्रवर्तते।।
प्रयोनत्वमर्थादेः सम्भवत्यत्र जातुचित्।
परं यातीह शैथिल्यम् , प्रवृत्तिः सा स्वभावजा।।14

आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी–कवि की काव्यकर्म में प्रवृत्ति किसी प्रयोजन से न मानकर कवि की स्वाभाविक क्रिया मात्र मानते हैं। आचार्य द्विवेदी कहते हैं–

प्रयोजनं कवेः काव्ये नापिकिञ्चन दृश्यते।
चुङ्कृतौ कलविङ्कस्य यथा प्राभातिके क्षणे।।15

प्रातःकाल चिड़िया कोई प्रयोजन निश्चय करके नहीं चहकती, बल्कि वह तो उसकी स्वाभाविक क्रिया मात्र है। चिड़िया की चहक की भाँति काव्य सर्जना भी कवि का स्वाभाविक कर्म है। लोकासक्ति, पुत्रासक्ति आदि से रहित महाकवि वाल्मीकि ने रामायण जैसे आर्ष काव्य की सर्जना किसी प्रयोजन से नहीं। कवि के मुख से निकली प्रथम कविता स्वाभाविक ही थी–मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः सास्वतीसमाः।

यत्क्रोञ्चमिथुनादेकमवधीत् काममोहितम्।।16

आचार्य द्विवेदी का मानना हैं कि कवि की दृष्टि से काव्य सप्रयोजन या निष्प्रयोजन हो सकता है किन्तु सहृदय सामाजिक के लिए वह उसी प्रकार सप्रयोजन है जैसे कि नवप्रसूता का दुग्ध स्वयं के लिये निष्प्रयोजन होता है परन्तु शिशु के लिए सप्रयोजन ही होता है।

न स्यात् प्रयोजनं स्याद् वा कवेः सामाजिकस्य तु ।
मातृस्तन्यं यथा काव्यं हन्त सर्वार्थ–साधनम्।।17
एषणा–त्रिययोत्तीर्णे रामायण–महाकवौ।
आत्माविष्कार–नैष्कर्म्य– नैसर्गी किं प्रयोजनम्।।18

आचार्य द्विवेदी कहते हैं कि कवि का अन्यतम प्रयोजन युगावश्यकता की पूर्ति करने वाले मन्त्र की अभिव्यक्ति करना हो सकता है। जैसे रघुवंश की अभिव्यक्ति, धर्म रक्षा भी काव्य का प्रयोजन हो सकता है। जैसे तुलसीदास द्वारा रामचरित वर्णन, भरतमुनि के नाट्यवेद की भाँति विश्वदैवत–साक्षि राष्ट्रीय–चेतना भी काव्य प्रयोजन हो सकता है। इस प्रकार आचार्य द्विवेदी ने काव्य के तीन प्रयोजन माने हैं। जो निम्न हैं–युगावश्यकता पूर्ति, स्वधर्मरक्षण और राष्ट्रदेव जागरण।

युगावश्यकता पूर्ति–मन्त्र–व्यक्तिरपि क्वचित्।
प्रयोजनं, रघुव्यक्ती रघुवंशे यथा कवेः।।
अधर्मोत्थानवेलायां धर्मरक्षापि दृष्यते।

Scanned by CamScanner

काव्यार्थस्तुलसीकाव्ये यथा यवन–शासने।।
राष्ट्रदेवप्रवोधोऽपि विश्वदैवत–साक्षिकः।
काव्यप्रयोजनं पुंभ्यः पुमर्थाश्चतुरो दुहन्।।19

शंकरदेव अवतरे काव्य को कवि की दृष्टि से प्रयोजनातीत मानते हैं। क्योंकि उनका तर्क है कि कवि दृष्टि से काव्यकर्म को सप्रयोजन मान लेने पर कवि का महत्व गौण हो जाता है।

परन्तु प्रमाता के स्थितिकोण से काव्य को सप्रयोजन स्वीकार करते हुए जीवनमुक्ति सात्विक आनन्द और मनोहारी शिक्षा के भेद से काव्यप्रयोजन के दो भेद स्वीकार करते हुए जीवनमुक्ति (मोक्ष) को काव्यप्रयोजन न मानकर जीवनमुक्ति सदृश आनन्दानुभूति को ही काव्य प्रयोजन मानते हुए कहते हैं–

प्रमातुःस्थिति कोणेन काव्यस्य द्वे प्रयोजने।
जीवनमुक्तिरिवानन्दः सात्विको हृद्यशिक्षणम्।।20

अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने भी काव्य कर्म को कवि का स्वाभाविक कर्म मानते हुए कहा है कि–

न धनाय न पुण्याय व्यवहाराय नाऽपि वा।
न च सद्यः सुखार्थाय काव्यं निर्मात्ययं कविः।।
वस्तुस्तस्य कर्मैतत् संस्कारोत्थं स्वभावजम्।
यदकृत्वा क्षणं यावन्नासौ शमधिगच्छति।।
यथा नोत्पतितुं शक्तो भ्रमरो गुञ्जनादृते।
तथा कविरयं काव्यादृते शक्तो न जीवितुम्।।21

कवि की काव्य कर्म में प्रवृत्ति न धन के लिए, न पुण्य के लिए, न व्यवहारिक ज्ञान के लिए, न तात्कालिक आनन्द के लिए होती है, अपितु काव्य रचना तो कवि के पूर्वजन्म के संस्कारों प्रबुद्ध स्वाभाविक कर्म है। गुञ्जन करना भ्रमर की स्वाभाविक क्रिया होती है, जिसके विना भ्रमर उड़ नहीं सकता, उसी प्रकार कवि अपनी स्वाभाविक क्रिया काव्य सर्जना के विना नहीं रह सकता।

आचार्य मिश्र कहते हैं कि यदि विद्वज्जन काव्य को सप्रयोजन मानना ही चाहते हैं तो लोक–परलोक को अभिप्रेत यश मात्र को ही काव्य प्रयोजन माना जा सकता है।

पश्यन्त्येव यदि प्राज्ञाः काव्यसृष्टौ प्रयोजनम्।
परत्रेह च निर्व्याजं यशस्तन्मेऽभिरोचते।।22

इस प्रकार आचार्य मिश्र काव्य कर्म को पारमार्थिक दृष्टि से स्वाभाविक कर्म माने हैं, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यश को काव्य का एक मात्र प्रयोजन मानते

Scanned by CamScanner

हैं। आपने आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा मान्य काव्य प्रयोजन 'मुक्ति' का खण्डन करते हुए कहा है कि –

यच्चाऽभिनवकाव्याङ्कारसूत्रकर्ता राधावल्लभेनोक्तं मुक्तिस्तस्य प्रयोजनमिति तत्कथं सम्भवतीति पृच्छामः। .....मोक्षसिद्धिस्तु काव्यनाट्याभ्यां मानुषङ्गिक्येव न पुनस्साक्षाद्रीत्या।..... मुक्तिसौख्यं मरणानन्तरेमेवोपभोक्तुं शक्यते।23 जो अभिनकाव्यालङ्कारसूत्रकार में राधावललभ त्रिपाठी ने कहा –मुक्ति काव्य का प्रयोजन है, तो पूछता हूँ कि वह कैसे सम्भव है? नाट्य(काव्य) त्रिवर्ग धर्म–अर्थ–काम का साधन है। नाट्य और काव्य से मोक्ष की सिद्धि प्रत्यक्ष रूप से कैसे हो सकती है? वह तो परोक्षतः ही होती है। मुक्ति का सुख तो मरणोपरान्त ही भोग्य होने से मुक्ति काव्यप्रयोजन नहीं हो सकता।

उपर्युक्त काव्यशास्त्रीयों के भिन्न–भिन्न मतों के परिषीलन से यही निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीन काव्यशास्त्र परम्परा में भारत ने दुःखार्त–श्रमार्त–शोकार्त लोगों तथा तपस्वियों की विश्रांति अर्थात् मुक्ति (आनन्द), धर्म्य, यष्, आयु, हित, बुद्धिविवर्धन(ज्ञान) तथा लोकोपदेश को काव्य का प्रयोजन माना है। ये समस्त प्रयोजन कवि जिससे भिन्न नहीं है, उस लोक के दुःख निवृत्ति और सुख प्राप्ति के लिए ही हैं। भामह ने पुरुषार्थ चतुष्टय, कीर्ति व प्रीति (आनन्द) को काव्य का प्रयोजन माना है। वामन ने प्रीति तथा कीर्ति को, आचार्य रुद्रट के काव्य प्रयोजनों–यष्, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सुख, विपदशान्ति, चतुर्वर्गज्ञान, अभीष्ट प्राप्ति, की भी अन्तिम परिणति दुःख निवृत्ति और सुख प्राप्ति में ही हो जाती है। आचार्य आनन्दवर्धन का सहृदयमन प्रीति काव्य प्रयोजन सुख से भिन्न नहीं है। आचार्य मम्मट के काव्य प्रयोजन–यश, अर्थ, व्यवहार ज्ञान, अकल्याण–नाश्, सद्यपरिनिवृत्ति, और कान्ता सम्मित उपदेश भी मूलतः दुःख निवृत्ति और सुख प्राप्ति के लिए ही हैं। विश्वनाथ ने चर्तुवर्गफल–प्राप्ति के साथ सुख को काव्य का प्रयोजन माना है। पण्डितराज जगन्नाथ के काव्य प्रयोजन– कीर्ति, परमाह्लाद, गुरुप्रसाद, और देवप्रसाद अन्ततः सुख के लिए ही हैं। आधुनिक काव्यशास्त्रियों में आचार्य छज्जूराम शास्त्री ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, कीर्ति और प्रीति को काव्य का प्रयोजन माना है। जिसमें कोई नवीनता नहीं है। आचार्य वद्रीनाथ ने कीर्ति, पुरुषार्थ चतुष्टय एवं कलुश निवृत्ति, सहृदयज्ञान–प्राप्ति, आनन्दानुभूति, और उपदेश को काव्य का प्रयोजन माना है। इनके मत में आनन्दानुभूति एक नया काव्यप्रयोजन जोड़ा है। आचार्य हरिदास सिद्धांत वागीश् आचार्य सीताराम चतुर्वेदी और आचार्य शंकर देव अवतरे ने भी आनन्द को ही काव्य प्रयोजन माना है। गिरिधर लाल व्यास ने परमनिवृत्ति को काव्य प्रयोजन माना है। आचार्य रहसविहारी द्विवेदी ने सद्मार्ग प्रवृत्ति, कीर्ति,

Scanned by CamScanner

पुरस्कार, सुख, सच्चरिताङ्कन, राष्ट्रभक्ति, और युगधर्म को काव्यप्रयोजन माना है। आचार्य द्विवेदी ने पुरस्कार, सुख, सच्चरिताङ्कन, राष्ट्रभक्ति और युगधर्म नवीन काव्यप्रयोजन वताये हैं। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने मुक्ति को, आचार्य ब्रह्मानन्द शर्मा ने सुख को, आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी ने युगावश्यकता पूर्ति, स्वधर्मरक्षण, राष्ट्रदेव–जागरण को काव्य का प्रयोजन माना है। आचार्य अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने धन, पुण्य, व्यवहारज्ञान, तात्कालिक आनन्द को काव्य के प्रयोजन न मानते हुए एकमात्र यश को ही काव्य प्रयोजन मानते है। प्राचीन और आधुनिक सभी काव्य शास्त्रियों के समस्त प्रयोजन सुख अर्थात् आनन्द की ही बात करते हैं। क्लेश निवृत्ति और आनन्द प्राप्ति ही सबका मूल प्रयोजन है। कवि लोक से भिन्न नहीं है। लोक का आनन्द ही कवि का मूल प्रयोजन है। तुकी रामायण, व्यास का महाभारत और समस्त पुराण, कालिदास के ग्रन्थ, भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, बुद्ध के उपदेश आदि सभी लोक के सुख(आनन्द) के लिए ही हैं। इसीलिए तो काव्यानन्द को ब्रह्मसहोदर कहा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1 श्लोक वार्तिक–112
2 नाट्यशास्त्र 1.114–115
3 काव्यप्रकाश–1.2
4 साहित्यविन्दु, प्रथम विन्दु पृ0 8
5 साहित्यमीमांसा पृष्ठ–11
6 काव्यकोंमुदी पृष्ठ–1
7 काव्यकोंमुदी पृष्ठ–1
8 साहित्यानुशासनम् पृष्ठ–228
9 साहित्यानुशासनम् पृष्ठ–229
10 अभिनवकाव्यप्रकाश
11 नव्यकाव्यतत्त्वमीमांसा
12 अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्र 1.2.4 से 1.2.6
13 अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्र पृ0 16
14 काव्यसत्यालोक पृ0 75
15 काव्यालङ्कारिका–20
16 रामायण 1.2.15
17 काव्यालङ्कारिका–26

Scanned by CamScanner